परलोक जीवन के यथार्थ अनुभव

द्वारा

अरविन्द प्रकाशन

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी,

जोधपुर ३४२००१ (राज.)

मूल्य ५० पैसे

दो शब्द

मानव मर कर कहां जाता है ? उसे किस प्रकार की स्थितियों से निबटना पड़ता है ? क्या वह दूसरा शरीर धारण करता है ? क्या दूसरा शरीर धारण करने पर उसे प्रसन्नता होती है ? आदि जटिल प्रश्नों के सरल उत्तर विद्वान लेखक ने इस लेख के माध्यम से दिये हैं।

लेखक ने लगभग तीन सौ से ज्यादा ऐसे लोगों से साक्षात्कार किया है, जो डाक्टरी भाषा में मृत घोषित किये जा चुके थे, पर कुछ समय बाद वे पुनः जीवित हो गये थे, और उन्होंने मृत्यु के बाद का जो विवरण दिया, वह आश्चर्यचकित होने के साथ साथ प्रामाणिक और सुखदायक था।

प्रवेश

मृत्यु एक डरावना शब्द है, और प्रत्येक व्यक्ति इस शब्द से भयभीत है, हर व्यक्ति की यह आकांक्षा रहती है कि वह ज्यादा से ज्यादा वर्षों तक जीवित रहे।

परन्तु मृत्यु 'भयानक' और 'डरावना' शब्द न होकर एक प्रकार से पुराने शरीर को नवीन रूप में रूपान्तरित करने की क्रिया है, रवीन्द्रनाथ ने मृत्यु को "जीवन का श्रृंगार" माना है, तो हमारे भारतीय दर्शन ने मृत्यु मानी ही नहीं है, उनके अनुसार तो आत्मा अजर अमर रहती है' बाहरी शरीर घिस जाने पर आत्मा का वेग और तेज उस काया में नहीं रह पाता, इसीलिए वह आत्मा दूसरा शरीर धारण कर लेती है।

परन्तु प्रश्न यह उठता है कि क्या मृत्यु के बाद मानव का पुनर्जन्म होता है ? मृत्यु के बाद मनुष्य कहां जाता है ? किस प्रकार की स्थिति में रहता है ? और उसे क्या-क्या अनुभव होते हैं ? मृत्यु के क्षण से दूसरे जन्म के क्षण तक वह किन-किन स्थितियों से गुजरता है और इन स्थितियों में उसे किस प्रकार के अनुभव होते हैं ?

परन्तु ऐसी कोई विधि या तरीका उपलब्ध नहीं है कि मृत्यु के बाद की स्थितियों की जानकारी प्राप्त की

जा सके, और प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत किया जा सके, परन्तु संसार में कई बार ऐसी घटनाएं घटित होती हैं, कि मृत्यु के बाद कुछ समय बीतने पर मनुष्य वापिस जिन्दा हो जाता हैं, यद्यपि ऐसी घटनाएं बहुत कम होती हैं, परन्तु इस प्रकार की घटनाएं पूरे संसार में घटित होती रहती हैं, कई बार तो समाचार पत्रों में पढ़ते हैं कि व्यक्ति का देहान्त हो जाता है, डाक्टर उसे मृत घोषित कर देते हैं, उसके स्वजन सम्बन्धी उसे अर्थी पर डालकर श्मशान तक ले जाते हैं कि बीच में ही हरकत शुरू होती है, और वह जिन्दा हो उठता है। जिन्दा होने के बाद उसके अनुभव अत्यन्त ही विलक्षण और रोचक होते हैं।

पाश्चात्य देशों में इन दिनों एक पुस्तक "लाइफ आफ्टर लाइफ" अत्यधिक चर्चित है, इस पुस्तक में लगभग १५० से ज्यादा उन लोगों के इन्टरव्यू प्रकाशित हैं, जिनकी किन्हीं कारणों से मृत्यु हो गई थी, पर कुछ क्षणों के बाद वे वापिस जीवित हो गये, लेखक ने पूरी प्रामाणिकता के साथ उनके अनुभवों को प्रकाशित किया है, उसे यह जानकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ, कि उन सभी के विवरण लगभग एक समान हैं, थोड़ा बहुत अन्तर तब आया जब उन व्यक्तियों ने अपना महत्व सिद्ध करने के लिए कल्पना से उसमें कुछ जोड़ा। पर जब कई प्रकार के प्रश्न उनके सामने रखे गये तो सही स्थिति सामने आ गई, और निष्कर्ष रूप में लेखक ने यह अनुभव किया कि उन सभी के विवरण लगभग एक समान हैं, इससे यह सिद्ध होता है कि मृत्यु के बाद वापिस जन्म

मर कर जीवित होने वाले तीन सौ लोगों के अनुभवों का सारांश—

- ऐसा लगता है, जैसे इस शरीर से कोई दूसरा शरीर निकल रहा हो।
- निकलने के बाद वह शरीर हवा में तैरने लगता है, वह शरीर सबको देखता है, पर उसे कोई नहीं देख पाता।
- उसे आश्चर्य होता है, कि उसके परिवार वाले रो क्यों रहे हैं, दुःखी क्यों हो रहे हैं ?

- फिर वह सूक्ष्म शरीर एक गहरी काली सुरंग से पार निकलता है, वहां उसे कई स्वजनों से भेंट होती है, जो उससे पहले मर चुके थे।
- फिर नीले प्रकाश में वह अपने आपको पाता है, और एक तेजस्वी व्यक्ति दिखाई देता है, जो उसके जीवन का लेखा जोखा चल चित्र की तरह उसके सामने रख देता है, पर उसका व्यवहार सहयोगी और मधुर होता है।
- तभी उसे सुनाई पड़ता है, कि अरे ! यह तो जल्दी आ गया, अभी इसकी मृत्यु नहीं है, तब उसके वापिस अपने मूल शरीर में जाने

लेने तक सभी व्यक्तियों को एक सी ही अवस्था से गुजरना पड़ता है।

मैं पिछले पन्द्रह वर्षों से इस कार्य में लगा हुआ हूँ, और भारतवर्ष के अलावा विदेशों में भी मैंने इसी उद्देश्य से यात्राएं की हैं, मैं अब तक ३०० से भी ज्यादा ऐसे लोगों से मिल चुका हूँ, जिनकी मृत्यु हो गई थी, परन्तु कुछ कारणों से वे वापस जीवित हो गये थे, मैंने इन सारे लोगों के विवरण टेप किए हैं, और मैंने अनुभव किया है,कि स्वर्ग और नरक जैसे तथ्य बेबुनियाद हैं, मैंने यह भी पाया है कि इन सभी लोगों के विवरण लगभग एक समान हैं, मैंने जिन लोगो से साक्षात्कार किया उन्हें

की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है, पर उस समय वह अपने मूल शरीर में जाना नहीं चाहता उसे तो मृत्यु के बाद का अस्तित्व अच्छा लगने लगता है, पर अनिच्छा से उसे पुन: अपने मूल शरीर में प्रवेश करना पड़ता है, और वह जीवित हो उठता है।

० वह अपने अनुभवों को उन दृश्यों को बताना चाहता है, पर उस दृश्य का, हूबहू वर्णन कर नहीं पाता, उसे उपयुक्त शब्द नहीं मिलते, साथ ही उसकी बातें सुनकर लोग हसते हैं, अतः वह चुप हो जाता है!

० कुछ दिनों तक तो वह अनमना रहता है, पर फिर उसी पुराने ढर्रे की जिन्दगी जीनी शुरू कर देता है।

तीन श्रेणियों में मैंने बांटा है—

१- उन लोगों के अनुभव, जिन्हें डाक्टरों ने जांच करने के बाद मरा हुआ घोषित कर दिया था, और कुछ समय बाद वे वापिस जीवित हो गये थे।

२- उन लोगों के अनुभव जो दुर्घटना, गम्भीर चोट या सांघातिक बीमारी के कारण मृत्यु को प्राप्त हो गये, परन्तु श्मशान तक पहुँचते-पहुँचते पुन: जीवित हो उठे।

३- उन लोगों के अनुभव, जो मृत्यु के एक क्षण पहले बेहोश से हो गये, जिसे डाक्टरी भाषा में मरा हुआ कहते हैं, परन्तु दो या तीन मिनट में ही पुन: जीवित हो गये।

मैंने इन लोगों के अनुभवों को सुनने के बाद यह अनुभव किया है, कि इनमें से अधिकांश लोग सत्य थे, लगभग सभी लोगों ने एक समान बातें बताई जबकि ये लोग परस्पर कभी भी एक दूसरे से मिले नहीं थे।

नीचे मैं इन ३०० प्रामाणिक अनुभवों में से कुछ

ज्योतिपिण्ड

जब नीले आलोक में पहुँचा, तो मैं अत्यन्त हर्षित हुआ, वह प्रकाश प्रखर होने पर भी सुखदायक था, यह एक ऐसा दिव्य प्रकाश था, जिससे आंखें चौधियाती नहीं, अपितु ठंडक प्राप्त होती है, इसी नीले आलोक में एक ज्योतिपिण्ड दिखाई दिया, जो ज्ञान प्रेम और मधुरता का समन्वय था।

ग्रनुभव दे रहा हूं।

यह ग्रनुभव बैंगलोर की समाज सेविका पार्वती बाई का है, जिनकी मृत्यु ग्रस्पताल में हो गई थी, "मैं हृदय रोग से पीड़ित थी, ग्रौर ग्रस्पताल में भर्ती हो गई थी, एक दिन सुबह मेरी छाती में जोरों का दर्द हुग्रा ग्रौर जरूरत से ज्यादा तकलीफ बढ़ गई ऐसा लगा कि जैसे मेरी श्वांस रुक गई हो ग्रौर उसी क्षण मैंने देखा कि मैं ग्रपने शरीर से बाहर निकल गई हूँ, ग्रौर ग्रत्यधिक हल्की होने की वजह से ऊपर की ग्रोर उठ रही हूँ, करीब सात या ग्राठ फीट ऊपर हवा में जाकर मैं स्थिर हो गई, मैंने नीचे देखा तो बिस्तर पर मेरा शरीर निश्चेष्ट पड़ा था, नर्स घबराई हुई मुझे देख रही थी, उसके मुंह से निकला 'यह तो मर गई' तभी मैंने डाक्टर को एक मशीन लेकर ग्राते हुए देखा, उसने मशीन की सुई मेरे शरीर से लगा दी, इससे मेरा शरीर फड़कने लगा, वे मुझे कृत्रिम श्वास भी देने की चेष्टा कर रहे थे, परन्तु दो मिनट के बाद डाक्टर ने मशीन की सुई हटा दी, उसके मुंह से निकला 'फिनिस्ड' ग्रौर सफेद चादर मेरे मुंह पर डाल दी।

तभी मुझे पीछे से जोरों का धक्का लगा, ग्रौर मैं धीरे-धीरे नीचे उतर कर ग्रपने शरीर में समा गई, इससे मेरा शरीर हिलने लगा, मुझे हिलते हुए देखकर नर्स खुशी के मारे चीख पड़ी, ग्रौर ग्रांखें फाड़-फाड़ कर मुझे देखने लगी।

यह सब कुछ तीन या चार मिनट में हो गया, परन्तु इस ग्रवधि में मुझे ग्रत्यधिक सन्तोष ग्रौर ग्रानन्द की

ग्रनुभूति हो रही थी।

२- यह विवरण मधुसूदन शर्मा का है, जिन्हें परिवार वालों ने मृत घोषित कर दिया था, ग्रौर उसे ग्रर्थी पर बांध कर श्मशान तक ले गए थे, परन्तु चिता में ग्राग लगाने से पूर्व शरीर में हरकत होकर मधुसूदन वापिस जी उठे थे, ग्रौर इसके बाद भी वे छः वर्षों तक जीवित रहे थे।

मेरे पूछने पर मधुसूदन ने बताया कि मैं जवान ग्रौर स्वस्थ था, परन्तु एक दिन प्रातःकाल मेरे पेट में जोरों से दर्द हुग्रा, धीरे-धीरे यह दर्द छाती में बढ़ गया, श्वास लेने में तकलीफ होने लगी, मैं ग्रपनी पत्नी को दर्द का कहकर लेट गया, परन्तु तब तक दर्द बढ़ गया था, मेरे भाई ने टेलिफोन कर डाक्टर को बुला लिया, परन्तु उन्होंने मेरे सीने, ग्रांख ग्रौर हाथ पैर को जांच कर मुझे मृत घोषित कर दिया।

मैंने यह देखा कि जब श्वास की घुटन बहुत ग्रधिक बढ़ गई, तो मैं चुपचाप ग्रपने शरीर से बाहर निकल ग्राया, मैं इतना हल्का था कि ऊपर हवा में तैर सा रहा था, मैं लगभग ग्राठ फीट ऊपर जाकर नीचे ग्रपने मृत पड़े शरीर को देख रहा था, डाक्टर ने जांचकर मुझे मृत घोषित कर दिया था, न तो मेरा हृदय धड़क रहा था ग्रौर न नाड़ी ही चल रही थी, मेरी पत्नी पछाड़ खाकर मेरे ऊपर गिर पड़ी थी, ग्रौर मां जोरों से चीख रही थी।

मैं शांत था ग्रौर ग्राश्चर्य कर रहा था कि ये सब

क्यों रो रहे हैं? धीरे-धीरे मेरे कई स्वजन और मित्र भी एकत्र हो गये, सभी की आंखों में आंसू थे और विलाप कर रहे थे।

कुछ क्षणों तक वहां रुक कर मैं और ऊपर उठने लगा, मेरा वेग अत्यन्त तीव्र था, मैं एक निश्चित दिशा की ओर बढ़ रहा था, कुछ दूर जाने के बाद मुझे अत्यन्त नीला प्रकाश दिखाई दिया, जो चारों तरफ बिखरा हुआ था, और वहीं मैंने एक तेजस्वी व्यक्तित्व को बैठे हुए देखा, वह अत्यन्त ही सुन्दर, भला, शांत और सहयोगी प्रतीत हुआ, मेरी इच्छा वहीं पर रुक जाने की हुई, यद्यपि मुझे पछाड़ खाकर रोती हुई पत्नी का स्मरण था, परन्तु मेरे मन में वहां वापिस जाने का कोई मोह नहीं रहा था, मैं चाहता था कि मैं वहीं रुक जाऊं, परन्तु उस तेजस्वी व्यक्तित्व ने मुझे वापिस जाने के लिए कहा और मैं उसी वेग के साथ यन्त्र चालित सा वापिस मुड़ गया।

जब मैं अपने घर की तरफ आया तो मैंने देखा कि मेरे पुत्र मेरी मृत देह को अर्थी पर बांध कर श्मशान की तरफ ले जा रहे हैं, मेरी इच्छा वापिस अपने शरीर में जाने की नहीं हो रही थी, मैं उस अर्थी के साथ-साथ ऊपर ही हवा में चलने लगा, मुझे वे सारे मित्र, सम्बन्धी रिश्तेदार साफ-साफ दिखाई दे रहे थे, जब श्मशान घाट पर मेरी देह को मूंज की रस्सियों से खोला, तो से पीछे एक धक्का सा लगा, और मैं अपने शरीर में पुनः प्रवेश कर गया, मेरे शरीर में हरकत होने लगी, और मैं अर्थी पर ही उठ बैठा, कुछ लोग डर के मारे भाग गये, पर

फिर वे मेरे पास लौट आये, और मैं उनके साथ ही पैदल घर लौटा।

३- यह विवरण दिल्ली के घनश्याम तिवारी का है, जिनकी कार एक्सीडेन्ट में मृत्यु सी हो गयी थी, लोग इन्हें पिचकी हुई कार में से बाहर निकाल कर एम्बुलेंस से अस्पताल लाये, तब मार्ग में ही इनका देहान्त हो गया था, अस्पताल में डाक्टरों ने जांच कर इसे मृत घोषित कर दिया था, पर १० मिनट के बाद ही यह जीवित हो उठा, काफी दिनों तक इसकी चर्चा अखबारों के माध्यम से होती रही थी, इनका विवरण इस प्रकार है—

मैं दुर्घटना में मर गया था, मुझे मेरे साथियों ने कार में से बाहर निकाला, तब तक मुझे थोड़ा बहुत होश था, परन्तु एम्बुलेंस में ज्योंही मुझे लिटाया, तो मैंने अनुभव किया कि मैं उस शरीर से बाहर निकल आया हूँ, मेरा शरीर अत्यन्त हल्का फुल्का हो गया था, और मैं एम्बुलेंस से बाहर एम्बुलेंस के समानान्तर उड़ रहा था, मैं चीख रहा था कि मैं यहां हूँ, मुझे अस्पताल मत ले जाओ, परन्तु मेरी बात कोई सुन नहीं रहा था, मैं अस्पताल में लोगों को रोकने के लिए बीच में खड़ा हो गया, परन्तु लोग मेरे शरीर के बीच में से होकर निकल रहे थे, मैं सभी को देख रहा था पर शायद मुझे कोई नहीं देख पा रहा था।

मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं अकेला सा हो गया हूं,

कोई मेरी बात सुन नहीं रहा है, तो फिर यहां रहने से लाभ ही क्या ? और मैं ऊपर की ओर बढ़ गया, पहले मुझे चारों तरफ काला प्रकाश सा दिखाई दिया पर आगे चलकर मुझे नीला प्रकाश अनुभव हुआ, यह प्रकाश अत्यन्त ही शीतल और सुखदायक था, मुझे यहां अत्यधिक आनन्द की अनुभूति हो रही थी, कि मुझे एक कोने से आवाज सुनाई पड़ी, "वापस जाओ" और न चाहते हुए भी वापिस मुड़ कर उसी स्थान पर आ गया, जहां मेरी मृत देह पड़ी थी, और मेरे घर वाले मुझे देख कर रो रहे थे, मैं धीरे से उस शरीर में न चाहते हुए भी पुनः घुस गया।

४- यह अनुभव कृष्णा बहिन का है, जो बम्बई की रहने वाली है, प्रसव काल में इनकी मृत्यु हो गई थी, अपना अनुभव बताते हुए कृष्णा बहिन ने कहा—

मेरा प्रसव काल निकट था, तभी मुझे ऐसा लगा कि जैसे मैं मर रही हूं, मेरी श्वांस घुटती हुई सी अनुभव हुई, मैंने ऊपर देखा तो हवा में मेरी मृत मां और दादी

नया शरीर

नया शरीर पाकर जीव प्रसन्न होता है, पर उसे लगता है, कि वह शरीर किसी पदार्थ का बना हुआ नहीं है, अपितु वायवीय है, जो क्षण भर में पहाड़ों, नदियों, दीवारों और चट्टानों को पार कर लेता है, उसे कोई बाधा व्याप्त नहीं होती, वह क्षण भर में कहीं पर भी जा सकता है।

दिखाई दी, जो मुझे बुला रही थी, और दूसरे ही क्षण मैं अपने शरीर से अलग हो गई।

मेरी बहिन जो मेरे पास खड़ी थी, ने कहा, कि "इसकी तो मृत्यु हो गई।" तभी मेरे उस मृत देह से बच्चा उत्पन्न हो गया, जो कि हो नहीं रहा था, मैं अपने बच्चे को देख रही थी, पर अब उसके प्रति मेरे मन में कोई मोह नहीं था।

तभी मेरा शरीर ऊपर उठने लगा और तीव्रता के साथ भागने लगा, आगे जाने पर मुझे चारों तरफ काला प्रकाश सा दिखाई दिया और कुछ ही क्षणों में यह काला प्रकाश हल्के नीले रंग में बदल गया, वहां पर एक सुन्दर आकर्षक व्यक्ति बैठा था, उसके पास दो नौकर खड़े थे, उसने नौकरों से कहा "इसको क्यों लाये हो, तुरन्त वापस ले जाओ" और उन दोनों बलिष्ठ नौकरों ने मुझे पकड़ कर फिर उसी स्थान पर ले आये जहां मेरी मृत देह पड़ी थी, बच्चा पास में किलक रहा था, और परिवार वाले रो रहे थे, उन दोनों में से एक पुरुष ने मुझे धक्का दिया और मैं न चाहते हुए भी उस शरीर में समा गई, जिससे मेरा शरीर वापिस जिन्दा हो गया।

यह अनुभव मेरे चाचा का है, जो कि सत्यवादी और कर्मनिष्ठ रहे है, वे आज भी जीवित है, आज से तीन साल पहले वे मरणासन्न थे, उन्होंने मुझे बुलाया था, मृत्यु के समय मैं उनके नजदीक खड़ा था, उनके दोनों पुत्र और पत्नी भी पास में खड़ी थी, जब मृत्यु का क्षण नजदीक आया तो उन्हें असहनीय वेदना होने लगी,

उन्होंने मेरी तरफ देखकर कहा "मैं अभी मरना नहीं चाहता, पर ऐसा लग रहा है, कि मुझे जाना ही पड़ेगा, ऐसा कहते कहते उनकी आंखें बन्द हो गई, जब मैंने और मेरे मित्र डा० रमेश भार्गव ने देखा तो उनके हृदय और नाड़ी ने काम करना बन्द कर दिया था, दूसरे शब्दों में उनकी मृत्यु हो चुकी थी।

परन्तु लगभग दस मिनट बाद ही उनके शरीर में हरकत हुई और वे पुनः जीवित हो गये, उन्होंने बताया कि मुझे कोई लेने आया था, जो कि अत्यन्त ही सुन्दर था, वह मुझे अपने साथ लेकर जाने लगा, कुछ आगे चलने पर एक अन्धेरी सुरंग दिखाई दी जिसके अन्दर से होकर हम आगे बढ़े और काफी समय तक चलने के बाद हमें एक नीला प्रकाश सा दिखाई दिया वहीं पर एक व्यक्ति बैठे हुए थे, उन्होंने मुझे पूछा कि तुमने अपने जीवन में कौन से ऐसे कार्य किये हैं, जिन पर तुम्हें गर्व हो सकता है, फिर मुझे पूछा कि क्या तुमने जीवन में परोपकार के कार्य किये हैं? उनके पूछने का ढंग अत्यन्त ही मधुर था, पर तभी उसने कहा कि अभी इसे क्यों लाये हो? मुझे इसकी नहीं, गली के नुक्कड़ पर रहने वाले ब्रजमोहन की जरूरत है, और वह व्यक्ति जो मुझे ले गया था, तुरन्त लेकर वापिस रवाना हो गया, मेरी आने की इच्छा बिल्कुल नहीं हो रही थी, परन्तु वह मुझे खींचकर लाया और धक्का देकर इस शरीर में पुनः प्रवेश कर दिया।

आश्चर्य की बात यह थी, कि उसी क्षण गली के नुक्कड़ पर रहने वाले ब्रजमोहन जी का अचानक देहान्त हो गया था।

इन सारी घटनाओं से निम्न तथ्य स्पष्ट होते हैं—

१- मृत्यु से पूर्व सभी व्यक्ति जीवित रहना चाहते हैं, और कोई भी व्यक्ति मरने की इच्छा न तो करता हैं, और न मरना चाहता है।

२- मरने के बाद उसका शरीर अत्यधिक हल्का हो जाता है, और वह हवा में तैरने लगता है, साथ ही साथ वह सात या आठ फीट ऊपर जाकर स्थिर भी हो जाता है।

३- वह सभी लोगों, मित्रों और सम्बन्धियों को भली प्रकार से देख पाता है, परन्तु वे लोग उसे नहीं देख पाते, इसी प्रकार वह सभी लोगों की आवाजें भली प्रकार से सुन पाता है, परन्तु उसकी आवाज कोई नहीं सुन पाता।

४- वह मृत्यु के कुछ समय बाद मोह ममता से दूर हो जाता है तथा अपने मां-बाप, पुत्र, पत्नी या बन्धु बांधव से कोई मोह ममता नहीं रखता।

५- मृत्यु के बाद किसी की भी इच्छा वापिस अपने मृत देह में आने की नहीं होती।

६- सभी ने यह स्वीकार किया है कि वे किसी व्यक्ति के साथ तीव्रता के साथ आगे बढ़ते हैं और पहले एक अंधेरी सुरंग से पार होना पड़ता है, तथा आगे चल कर उन्हें नीला सुखदायक प्रकाश चारों तरफ बिखरा हुआ दिखाई देता है, जो अत्यन्त ही मधुर और अपनत्वपूर्ण होता है।

७- मृत्यु के बाद प्रत्येक प्राणी एक दूसरे ही शरीर में

रूपान्तरित हो जाते हैं, जिन्हें आध्यात्मिक शरीर कहा जा सकता है, इसी शरीर के द्वारा वे तीव्रता के साथ जा सकते हैं।

८- सभी ने स्वस्थ, सुन्दर, दिव्य देवदूत के बारे में वर्णन किया है, जिनका व्यवहार अत्यन्त सौम्य होता है, वे प्रश्न भी पूछते हैं तो इसके पीछे कोई आरोप, धमकी या चेतावनी नहीं होती, कुछ भी उत्तर दिया जाय उस देवदूत का व्यवहार अत्यन्त ही मधुर और प्रेमपूर्ण होता है।

९- सभी ने नीले आलोक का वर्णन किया है, और यह आलोक उन्हें अत्यन्त ही सुखदायक प्रतीत हुआ।

कुल मिलाकर यह स्पष्ट है, कि मृत्यु के बाद मानव एक नवीन शरीर को धारण करता है, जिसे 'आध्यात्मिक शरीर' कहा जाता है, इस शरीर को धारण करने के बाद वह मोह ममता से परे हटकर एक विशेष यात्रा पर निकल पड़ता है, जिसकी परिणती नीले आलोक के दिव्य क्षेत्र में होती है, और वह हमेशा के लिए वहीं रहने की इच्छा रखता है, इसके कुछ ही क्षणों बाद या तो वह पुनः उसी शरीर में लौट आता है या किसी अन्य नवजात शिशु के शरीर में समाहित होकर पुनः जन्म ले लेता है।

मेरे यह अनुभव जो शतप्रतिशत प्रामाणिक और यथार्थ है, भारतीय प्राचीन दर्शन ग्रन्थों से भी साम्य रखते हैं कि मरने के बाद आदमी पुनः जन्म लेता है, स्वर्ग और नरक की कल्पना, यमराज और धर्मराज के विवरण बेमानी हैं, परन्तु यह सही है, कि आत्मा मृत्यु के बाद अत्यन्त ही आनन्ददायक यात्रा पर निकल पड़ती है, और जब तक पुनः जन्म नहीं ले लेती, तब तक वह विशेष आनन्ददायक क्षणों में रहती है।

———